International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 17-07-2026, Accepted: 18-08-2026, Published: 03-09-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 142-143

काव्य में संवेदना का पक्ष

डॉ. प्रणव शर्मा
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
शोध संक्षेप: काव्य में संवेदना सबसे महत्वपूर्ण तत्व होती है। कोई घटना या दृश्य कवि को प्रभावित करते हैं और यह प्रभाव उनके संवेदनशील हृदय तक कुच करता है। कवि हृदय के अन्तःस्थल से उठी संवेदनाओं को प्रतिक्रिया स्वरूप व्यक्त करता है। संवेदना के अभाव में काव्य अपने मूल अर्थवत्ता खो बैठती है। किसी काव्य को बार–बार पढ़ने या सुनने के पीछे का एक मुख्य कारण काव्य में संवेदना के विभिन्न स्तरों का निहित होना होता है। किसी काव्य का अलंकार या रस युक्त होना लेकिन संवेदना का ना होना काव्य को कमजोर करता है। केवल शब्दों की सजावट से काव्य अपने सभी गुणों में खिल नहीं पाता। इस शोध पत्र के माध्यम से काव्य में संवेदना के पक्ष पर विचार किया गया है।

मूल शब्दः चित्तवृत्ति, श्रृंगारात्मक, भाव–भंगिमा, मर्मस्पर्शिता, ज्ञानोपलब्धि

हिंदी के 'संवेदना' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'संवेद' शब्द से हुई है। जिसका शाब्दिक अर्थ सुख–दुःख की अनुभूति, ज्ञान या बोध होता है। अंग्रेजी में संवेदना के लिए 'सिम्पैथी' या 'फेलो–फीलिंग' जैसे शब्द उपयोग होते हैं। जिसमे 'सिम्पैथी' का अर्थ सहानभूति और फीलिंग का अर्थ अनुभूति या महसूस करना होता है। संवेदना को मनोविज्ञान के क्षेत्र में 'सेंसेशन' कहा जाता है। संवेदना शब्द के विच्छेद से सम और वेदना मिलता है। सम एक उपसर्ग रूप में प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ सम्यक या समान रूप से है और वेदना का अर्थ पीड़ा से है। इन अर्थों को देखने पर यह तथ्य सामने आता है कि संवेदना अनुभव या अनुभूति करने की एक प्रक्रिया है।

यह प्रक्रिया भौतिक स्तर पर हमारे इन्द्रियों आंख, नाक, कान आदि से स्वतरू होती है। दूसरा आतंरिक स्तर पर संवेदना हमारे मनोभावों से जुड़ी प्रक्रिया होती है। किसी दुरूखद घटना पर मन में दुःख के भाव आना हमारी दुरूखी संवेदना की अनुभूति को प्रकट करते हैं। वहीं सुख के क्षण में सुखी संवेदना की अनुभूति होती है। सहानभूति के अर्थों में हम किसी के दुःख या सुख की अनुभूति कर अपनी संवेदना प्रकट करते हैं। हमारे मन में किसी घटना को देख, पढ़ या सुनकर जो भाव उत्पन्न होते हैं वे संवेदना के अंतर्गत आते हैं। किसी कला से जुड़ा व्यक्ति अनुभूति के विभिन्न स्तरों पर पहुंचकर संवेदना को कला रूप में व्यक्त करता है। संवेदना उसके लिए प्रेरणा बन जाती है।

संवदेना की उत्पत्ति व्यक्तिगत भी हो सकती है या समष्टिगत भी। यह निर्भर करता है कि अनुभूति के किस स्तर पर कोई घटना उसे छूती है। सबकी अनुभूति का स्तर अलग–अलग होता है अतः संवेदना का बोध भी अलग होता है। संवेदना का स्तर संवेदनशील चेतना के स्तर पर निर्भर करता है। संवेदना को अनुभव करने की प्रक्रिया बच्चों से बूढों तक सभी अवस्था में होती है। मनुष्यों में संवेदना पीड़ा या आनन्द किसी भी प्रकार की हो सकती है। लेकिन संवेदना को पीड़ा, शोक, कष्ट के प्रसगों में अधिक लिया जाता है। दूसरों की पीड़ा में सहभागी होना अपनी सहानभूति प्रकट करना अपनी संवेदना की अभिव्यक्ति है।

संवेदना पर विचार करने के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के अपने विचार हैं जिन्हें समझ लेना जरुरी हो जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार "संवेदना का अर्थ सुख दुःखात्मक अनुभूति ही है, उसमे भी दुःखानुभूति से इसका गहरा सम्बन्ध है..संवेदना शब्द अपने वास्तविक या अवास्तविक दुःख पर कष्टानुभव के अर्थ में आया है। मतलब यह कि अपनी स्थिती को लेकर दुःख का अनुभव करना ही संवेदना है"।[1]

अज्ञेय संवेदना को एक दृष्टि बताते हुए कहते हैं– "संवेदना वह यंत्र है जिसके सहारे जीव–दृष्टी अपने से इतर सब कुछ के साथ सम्बन्ध जोड़ती है – वह सम्बन्ध एक साथ ही एकता का भी क्योंकि उसके सहारे जहाँ जीव–दृष्टी अपने से इतर जगत को पहचानती है वहाँ उससे अपने को अलग भी करती है"।[2]

धीरेन्द्र वर्मा हिंदी कोश भाग–2 में लिखते हैं "मूलतः वेदना या संवेदना का अर्थ ज्ञान या ज्ञानेन्द्रियों का अनुभव है। इसके अनुसार संवेदना उत्तेजना के सम्बन्ध में देह रचना की सर्वप्रथम संचेतन प्रतिक्रिया जिसमें हमें वातावरण की ज्ञानोपलब्धि होती है। संवेदना हमारे मन की चेतना की वह कूटस्थ अवस्था है जिसमें हमें विश्व की वस्तु विशेष का बोध न होकर उसके गुणों का बोध होता है"।[3]

डॉ. रामदरश मिश्र के संवेदना की महत्ता बताते हुए कहते हैं "संवेदनाओं के कारण ही हम समय की दूरियाँ पार कर आदिकाल के कवियों के कविताओं का आस्वाद ले रहे हैं, मध्यकालीन कविताओं में तल्लीन हो जाते हैं। सुख–दुःख, राग–विराग, सौंदर्य–असौन्दर्य की संवेदना प्राचीन और चिर नवीन है। इन संवेदनाओं को जाग्रत रखने वाले उपादान बदलते रहते हैं और सामाजिक जटिलता के अनुरूप संवेदनाओं में जटिलता आती रहती है। एक दुसरे में संक्रमण होता रहता है। आज की संवेदनाएं उलझी हुई हैं, क्योंकि सामाजिक सम्बन्ध उलझे हुए हैं, मूल्य उलझे हुए हैं। इन संवेदनाओं को उनकी समस्त गहनता, सच्चाई और तीव्रता में पकड़ कर उन्हें चित्रित करना सर्जक का मूल धर्म है। इसी से कृति में शक्ति और मर्मस्पर्शिता आती है"।4

सभी परिभाषाओं के आधार पर संवेदना एक ऐसी व्यापक मानसिक प्रक्रिया है जो दुःख या पीड़ा के अर्थों में मुख्य रूप से बोध में आता है। मनुष्य के मनोभावों से संवेदना का सीधा सम्बन्ध है। दुसरों के प्रति सहानभूति के व्यक्त करते हुए हम उनके पीड़ा का अनुभव करते हैं। अनुभूति के आधार पर संवेदना को तीन भागों (अ) विशिष्ट संवेदना (ब) अंतरावयव संवेदना (स) स्नायविक संवेदना में विभाजित किया है।

यहां विशिष्ट संवेदना का आशय इन्द्रियगत संवेदना से है। इसके अंतर्गत शारीरिक स्तर पर उत्तेजना से उत्पन्न होने वाली संवेदना आती है। पदार्थों का ज्ञान इसी संवेदना से होता है। रस, त्वचा, प्राण, श्रोत संवेदना इसमें आते हैं। अंतरावयव संवेदना के अंतर्गत शरीर में होने वाली पाचन–क्रिया, रक्त–संचार और श्वास प्रकिया

आती है। जिसमें आघात, जलन, पेट की समस्या, भूख, प्यास आदि हैं। सन्याविक संवेदना में दृष्टि, स्पर्श, ध्वनी, प्राण, स्वाद से सम्बन्धित अनुभूति आती है।

मनोविज्ञान में मानव मन के संवेदनशील होने को लेकर बहुत से प्रयोग हुए हैं। विशेष परिस्थिति में व्यक्ति अधिक संवेदनशील हो जाता है। भिन्न व्यक्तियों में संवेदना की सीमा अलग–अलग होती है। संवेदना से ही व्यक्ति को उचित–अनुचित या सुख–दुःख का अनुभव होता है। संवेदना मनुष्य को बाह्य जगत से जोड़ने का कार्य करती है। मानवीय संवेदना के स्तर पर मनुष्य नैतिकता और मानवीय मूल्यों जैसे आयाम पर विचार और कार्य करता है। जो जितना संवेदनशील होता उसके अन्तःकरण में मानवीय मूल्यों की संवेदना उतनी उतनी ऊँची होगी। एक माँ के मन में बच्चे के लिए प्रेम और ममता रुपी संवेदना मानवीय संवेदना का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस प्रकार संवेदना हमारे जीवन में की एक महत्वपूर्ण अन्तः और बाह्य प्रक्रिया है जिससे हम एक–दुसरे से संपर्क स्थापित कर पाते हैं।

काव्यों में संवेदना प्रेरणा बनकर चलती है। संवेदनात्मकता के गहरे सागर में स्पंदित होते हुए कवि लिखता है। कवि समाज में रहते हुए अपने परिवेश से विभिन्न संस्कारों को ग्रहण करता है। यह संस्कार उसके संवेदनात्मक अनुभूति या समझ के निर्माण में सहायक होते हैं। बाह्य जगत की घटनाएं उसके मन के अन्तःस्थल को प्रभावित करते हैं। जीवन की विभिन्न परिस्थितियों का अनुभव करते हुए जब वह किसी स्थिति को काव्य रूप में प्रकट करता है तो उसके संवेदना की अभिव्यक्ति होती है। संवेदना के गहरे स्थल तक पहुंचकर लिखा काव्य पाठकों को अधिक प्रभावित करता है।

आई. ए. रिचड्र्स के अनुसार "अन्तःवृत्तियों का संगठन ही साहित्य का उद्देश्य है"।[5] अन्तःवृत्तियों का संगठन कहते हुए आई. ए. रिचड्र्स संवेदना की ही बात करते हैं। अन्तः वृत्तियाँ जैसे सुख–दुःख, प्रेम, घृणा, क्रोध का संगठन कवि के संवेदनात्मक अनुभूतियों में चिन्हित हो जाते हैं। मुंशी प्रेमचंद्र जी ने भी अन्तः वृत्तियों की बात रखते हुए संवेदनाओं को ही पहले महत्व देने के बात कही है। वह साहित्य हमेशा अमर रहता है जो मनुष्य की आंतरिक संवेदनाओं पर आधारित रहता है। ईर्ष्या, प्रेम, क्रोध, लोभ, भक्ति, विराग, दुःख, और लज्जा ये सभी मानव की मौलिक प्रवृत्तियाँ हैं। इन्हीं की अभिव्यक्ति साहित्य का परम उद्देश्य है।

कवि की दृष्टि अपने तात्कालीन परिस्थितियों पर तो रहती ही है लेकिन वह युगीन सीमाओं को देखता और लिखता है। उसे इतिहास की घटनाएं भी संवेदित कर सकती है। एक कवि की संवेदना या देखने की दृष्टि अलग–अलग होती है इसलिए एक ही घटना पर लिखी दो कविताओं में दो अलग तथ्यों का समावेश भी हो सकता है। हिंदी साहित्य में आदिकाल से ही काव्यों में संवेदना का विशेष स्थान रहा है। वीरगाथा काल में राजाओं के आश्रय में रहने वाले कवि और चारण नीति, श्रृंगार आदि के काव्य सभाओं में सुनाया करते। आश्रयदाताओं की वीरता और गाथाओं के वर्णन से भरे संवेदनात्मक काव्यों की रचना करते थे। श्रृंगारिक रचनाओं में कवि प्रेम, प्रकृति या नख–शिख वर्णन किये जाते थे।

भक्तिकाल में जब भारत में इस्लामी आक्रमणों ने जन–जीवन की शांति भंग कर दी थी। हर जगह तबाही का दृश्य था। हिन्दू जनता असहाय थी उनके सामने उनके देवी–देवीताओं का अपमान किया जा रहा था। मंदिर तोड़े जा रहे थे। जनता लड़ भी नहीं सकती थी उनके हाथ में कुछ नहीं था सिवाय मूक होकर अत्याचार सहने के। धीरे–धीरे मुस्लिम साम्राज्य स्थापित हो गया। अचानक राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक वातावरण में बड़ा परिवर्तन हो गया था। जनता में उदासी और हताशा से भर गई थी। ऐसे समय में जनता की संवेदना को समझने की उनकी पीड़ा को अपनी पीड़ा समझ कर काव्य रचने का कार्य उस समय के कवियों ने किया।

भक्त कवियों ने जनता का ध्यान भक्ति की ओर ले जाने का प्रयास किया। हताशा के समय में उनकी पीड़ा को हरने का दूसरा मार्ग नहीं था। भगवान की भक्ति में लिखे संवेदनात्मक काव्यों के माध्यम जन–सामान्य की संवेदना को बल देने का प्रयास किया गया। वहीँ रीतिकाल रीतिकाल में भी वीरगाथा काल के जैसे ही श्रृंगारात्मक और वीरता के काव्य लिखे गए। लेकिन प्राय: काव्यों में रीती का अधिकाधिक महत्व बढ़ने के कारण संवेदना का मुख्य स्थान नहीं रह गया था। कवियों में अपने पांडित्य को प्रदर्शित करने की वृति अधिक दिखाई देने लगी थी।

आधुनिक हिंदी साहित्य में छायावाद के समय का काव्य एक अलग संवेदनात्मक भाव लिया हुआ था। एक ओर देश की तात्कालीन वास्तविक वस्तुस्थिति से हटकर काव्य लिखे जा रहे थे तो एक ओर ऐतिहासिक चित्रवृति के साथ तात्कालीन परिस्थिति को जोड़कर काव्यों की रचना भी की जा रही थी। वह ऐसा समय था जब भारत में ब्रिटिश शासन के शोषण से जनता निराश थी। जन–सामान्य स्वतंत्रता के सपने तो देख सकता था लेकिन उसके लिए कुछ करने की प्रेरणा का कार्य कवियों ने किया। परतंत्र भारत की जनता को भारत की प्राचीन गरिमा को याद दिलाने के लिए ऐतिहासिक गौरव की संवेदना से ओतप्रोत काव्य लिखे गए। इन नए कवियों का काव्य नए संवेदनात्मक भावों से स्पंदित था।

स्वतंत्रता के कुछ सालों बाद कवियों का सत्ता पक्ष से मोहभंग होता गया। सामाजिक और राजनीतिक स्तर में गिरावट आई। सामान्य जनता या किसानों की समस्या पर सत्ता पक्ष का कोई विशेष ध्यान नहीं था। गरीबी, भ्रष्टाचार, भुखमरी, असमानता जीवन मूल्यों में ह्रास जैसी समस्या निरंतर बढ़ती जा रही थी। ऐसे में कवियों ने नयी भाव–भंगिमा, नयी चेतना और नयी संवेदना को काव्यों में अपनाया। इस प्रकार हिंदी साहित्य में कविता विभिन्न पड़ाव से चलती हुई कभी व्यक्तिगत मानवीय संवेदना से गुजरी तो कभी सामाजिक मानवीय संवेदना से। एक ओर कवि अपने ही जीवन की गुत्थीयों के आसपास उलझा दिखने लगा और एक ओर यथार्थ की संवेदना को शामिल कर काव्य की रचना करने लगा।

निष्कर्ष

20वीं शताब्दी के बाद के काव्यों ने संवेदना के नयी ऊँचाइयों को छुआ है। भारत देश में प्रारंभ से ही विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं का सम्मिश्रण होता आया है। यहां की भाषा संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश जैसे बोली भाषाओँ से होती हुई खड़ी बोली तक पहुंची है। शिक्षा के स्तर में सुधार होने से जीवन दर्शन, नैतिक मूल्य और विचारों का नया धरातल तैयार हुआ है। यह घटना आधुनिक काव्यों के बदले हुए रूप को और उनमे निहित संवेदना के नए आयामों को देख कर समझा जा सकता है। संवेदना के स्तर पर ही साहित्यकार साहित्य की रचना करता है और एक चित्रकार चित्र उकेरकर अपनी संवेदना व्यक्त करता है। इस प्रकार संवेदना काव्य में की एक महत्वपूर्ण अन्तः और बाह्य प्रक्रिया है जिससे काव्य सभी पाठकों तक पहुँच पाता है।

सन्दर्भ

1. चिंतामणि भाग–1, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, गद्यकोश.ओर्ग.
2. हिंदी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य, पृष्ठ–17, अज्ञेय
3. हिंदी साहित्य कोष भाग–2, पृष्ठ सं.863, धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल प्रकाशन
4. संवेदना और शिल्परूअर्थ और परिभाषा, पृष्ठ सं.29, डॉ. नीरज शर्मा, वाणी प्रकाशन,2011
5. प्रिंसिपल ऑफ़ लिटरेरी क्रिटीसिज्म, पृष्ठ सं.2, आई.ए.रिचर्डस